**International Journal of Sociology and Political Science**
**www.sociologyjournal.in**
**Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737**
**Received: 01-08-2023, Accepted: 16-08-2023, Published: 01-09-2023**
**Volume 5, Issue 2, 2023, Page No. 70-72**

# प्रवासी भारतीय और भारत–युक्रेन सम्बंध

**अखिलेश पाल**
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कालेज, प्रयगराज, उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांश**
अंतर्राष्ट्रीय अभिनेताओं ने प्रवासी भारतीयों के महत्वपूर्ण संसाधन का और अधिक लाभ उठाने के बारे में प्रारंभिक सिफारिशें प्रदान कीं। परिसंघ के कुछ सदस्यों ने प्रभावित कमजोर समूहों को संबोधित करने के लिए मानवीय सिद्धांतों और संचार कौशल पर अधिक मार्गदर्शन, अधिक समन्वय और अधिक क्षमता विकास की मांग की। इसके विपरीत, अन्य लोग स्वयं को प्रवासी संस्थाओं के रूप में नहीं पहचानते हैं, वे अनौपचारिक जमीनी स्तर के समूहों के रूप में बने रहना पसंद करते हैं जो अस्थायी क्षमता में कार्य करते हैं, गंभीर परिस्थितियों में एकजुट होते हैं। कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, यूक्रेनी प्रवासी समूहों और व्यक्तियों ने सामुदायिक गतिशीलता के लिए अपार क्षमता दिखाई है, साथ ही सामुदायिक प्रतिक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने में सराहनीय प्रबंधकीय साहस और पारस्परिक कौशल भी दिखाया है। ऐसे समूह तेजी से विकसित हो रही स्थिति का जवाब देने के लिए नए और रचनात्मक समाधानों की ओर भी मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं – एक तरह से जो टिकाऊ हो।

**मुख्य शब्दः** प्रवासी, भारतीय, भारत, युक्रेन, सम्बंध

युक्रेन पूर्वी यूरोप में स्थित एक देश है। इसकी सीमा पूर्व में रूस, उत्तर में बेलारूस, पोलैंड, स्लोवाकिया, पश्चिम में हंगरी, दक्षिणपश्चिम में रोमानिया एवं मॉल्डोवा और दक्षिण में काला सागर और अजोव सागर से मिलती है। देश की राजधानी होने के साथ–साथ सबसे बड़ा नगर भी कीव है। युक्रेन का आधुनिक इतिहास ६वीं शताब्दी में तब से प्रारम्भ होता है जब यह 'कीवियन रुस' के नाम से एक बड़ा और शक्तिशाली राज्य बनकर खड़ा हुआ। परन्तु 12वीं शताब्दी में यह महान उत्तरी लड़ाई के बाद क्षेत्रीय शक्तियों में विभाजित हो गया। 19वीं शताब्दी में इसका बड़ा भाग रूसी साम्राज्य का और बाकी का भाग आस्ट्रो–हंगेरियन नियंत्रण में आ गया। बीच के कुछ वर्षो के उथल–पुथल के पश्चात 1922 में सोवियत संघ के संस्थापक सदस्यों में से एक बना। 1945 में यूक्रेनियाई एसएसआर संयुक्त राष्ट्रसंघ का सह–संस्थापक सदस्य बना। सोवियत संघ के विघटन के बाद युक्रेन पुनः स्वतंत्र देश बना। यूक्रेन के नाम की व्युत्पत्ति के बारे में अलग अलग परिकल्पनाये हैं। सबसे व्यापक और पुरानी परिकल्पना के अनुसार इसका अर्थ 'परदेश' है, जबकि हाल ही के कुछ अध्ययन में इसका एक अलग ही अर्थ 'मातृभूमि' या 'क्षेत्र, देश' का दावा किया जा रहा है। अधिकतर इंग्लिश बोलने बाले देशों में इसे 'द यूक्रेन' के नाम से ही जाना जाता है।

यह पूर्णतः यूरोपियाई सीमा के अंदर आने वाला सबसे बड़ा देश है एवं यूरोप का दूसरा सबसे बड़ा देश है। 603,628 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल और 2782 किलोमीटर लम्बी तटरेखा के साथ, यूक्रेन दुनिया का 46वां सबसे बड़ा देश है। यूक्रेन में ज्यादातर समशीतोष्ण जलवायु रहती है, इसके अपवाद क्रिमीआ के दक्षिणी तट हैं जहाँ उपोष्णकटिबंधीय जलवायु है। यहाँ की जलवायु अटलांटिक महासागर से आने वाली मामूली गर्म तथा नम हवा से प्रभावित होती है। औसत वार्षिक तापमान का वितरण भी असामान्य रहता है. यह पश्चिम और उत्तर में सबसे अधिक जबकि पूर्व और दक्षिण पूर्व में सबसे कम है। पश्चिमी यूक्रेन में, विशेष रूप कार्पथियान पहाड़ों में वर्षा 1,200 मिलीमीटर (47.2 में) के आसपास प्रतिवर्ष होता है जबकि क्रीमिया और काला सागर के तटीय क्षेत्रों के आसपास 400 मिलीमीटर होती है।

यूक्रेन एक गणराज्य है जिसमे अलग विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शाखाओं के साथ एक मिश्रित अर्द्ध संसदीय, अर्द्ध राष्ट्रपति प्रणाली है। 24 अगस्त 1991 में अपनी स्वतंत्रता के साथ ही यूक्रेन ने 28 जून 1996 को संविधान लागु कर अर्द्ध–राष्ट्रपति गणतंत्र की पद्धति अपना ली, हलाकि 2004 में इसमें कई संशोधन किये गए जिससे इसका झुकाओ संसदीय प्रणाली की और बढ़ गया, हलाकि इसका विरोध सारे देश में किया गया और अंत में यूक्रेनी कोर्ट ने 30 सितंबर 2010 को सारे संविधान में किये गए संशोधनों को खारिज कर पुनः 1996 वाले संविधान को लागु कर दिया 2004 का संवैधानिक संशोधन तथा 2010 पर कोर्ट के आदेश पर राजनीतिक बहस का एक प्रमुख विषय बन गया कि न तो 1996 के संविधान और न ही 2004 के संविधान, ''संविधान पूर्ववत करें'' करने की क्षमता प्रदान करता हैं, 21 फरवरी 2014 को राष्ट्रपति विक्टर यानुकोवायच और विपक्षी नेताओं के बीच पुनः 2004 के संविधान की वापसी के लिये एक समझौता हुआ। यह समझौता यूरोपीय संघ की मध्यस्थता के बाद हुआ, जिसके बाद सारे देश में विरोध पनपने लगा। नवम्बर 2013 में शुरू हुआ हिंसक झड़प एक सप्ताह तक चला जिसमें कई प्रदर्शनकारी मारे गए। इस सौदे में 2004 के संविधान में देश के लौटने, गठबंधन सरकार का गठन, जल्दी चुनाव का आवाहन तथा जेल से पूर्व प्रधानमंत्री यूलिया ज्लउवीमदाव की रिहाई भी शामिल थी। समझौते के एक दिन बाद, यूक्रेन की संसद ने समझौता खारिज कर दिया और अपनी वक्ता ऑलेक्जेंडर ज्नतबीलदवअ को अंतरिम राष्ट्रपति और ।तेमदपल ल्जेमदलना को यूक्रेन के प्रधानमंत्री के रूप में स्थापित किया।

सोवियत संघ के विघटन के बाद दिसंबर 1991 में भारत गणराज्य ने यूक्रेन को एक संप्रभु देश के रूप में मान्यता दी और जनवरी 1992 में राजनयिक संबंध स्थापित किए। कीव में भारतीय दूतावास मई 1992 में खोला गया और यूक्रेन ने फरवरी 1993 में नई दिल्ली में अपना मिशन खोला। ओडेसा में जो कि, यूक्रेन में तीसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर और नगरपालिका है और दक्षिण–पश्चिम में स्थित एक प्रमुख पर्यटन केंद्र, बंदरगाह और परिवहन केंद्र है। देश के काला सागर के उत्तर–पश्चिमी तट पर स्थित है, यह शहर ओडेसा रायन और ओडेसा ओब्लास्ट

का प्रशासनिक केंद्र भी है, साथ ही एक बहुजातीय सांस्कृतिक केंद्र भी है। ओडेसा को कभी–कभी ब्लैक सी का मोती, साउथ कैपिटल (रूसी साम्राज्य और सोवियत संघ के तहत), द ह्यूमर कैपिटल और सदर्न पलमायरा कहा जाता है, भारत का महावाणिज्य दूतावास 1962 से मार्च 1999 में बंद होने तक कार्य करता रहा। पूर्व सोवियत संघ में रूस के बाद यूक्रेन भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है।

यूक्रेन में एक छोटा लेकिन जीवंत भारतीय समुदाय रहता है, जिसमें ज्यादातर व्यावसायिक पेशेवर और छात्र शामिल हैं। यूक्रेन में लगभग 18,000 भारतीय छात्र पढ़ रहे हैं, मुख्यतः चिकित्सा के क्षेत्र में। भारतीय व्यावसायिक पेशेवर मुख्य रूप से फार्मास्यूटिकल्स, आईटी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में काम करते हैं। 2001 में भारतीय प्रवासियों द्वारा स्थापित 'इंडिया क्लब', यूक्रेन में भारतीय प्रवासियों को सक्रिय रूप से शामिल करता है और कई कार्यक्रम आयोजित करता है – जैसे दिवाली उत्सव, क्रिकेट टूर्नामेंट, होली उत्सव, भारतीय नृत्य उत्सव, बॉलीवुड फिल्मों की स्क्रीनिंग आदि।

4 मार्च, 2022 को, भारत ने यूक्रेन और रूस से पूर्वोत्तर यूक्रेनी शहर सुमी में युद्धविराम लागू करने के लिए कहा, ताकि स्थिति खराब होने के कारण वहां घिरे सैकड़ों भारतीय छात्रों को निकाला जा सके। भारत के यूक्रेन के साथ तब भी मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं जब यूक्रेन सोवियत संघ का एक गणतंत्र हिस्सा था । वार्षिक विदेश कार्यालय परामर्श सचिव स्तर पर आयोजित किए जाते हैं। एशिया क्षेत्र के प्रभारी उप विदेश मंत्री इन परामर्शों में यूक्रेनी पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं। यूक्रेन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत के साथ सकारात्मक सहयोग करता रहा है। यूक्रेन भारत और पाकिस्तान द्वारा द्विपक्षीय शिमला समझौते के आधार पर जम्मू–कश्मीर मुद्दे के समाधान का समर्थन करता है। यूक्रेन संयुक्त राष्ट्र संरचना के सुधारों का भी समर्थन करता है।

2022 में यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के दौरान, भारतीय मीडिया ने रिपोर्ट करना शुरू कर दिया कि 1998 में यूक्रेन ने भारत के परमाणु परीक्षण का विरोध किया था और गलत रिपोर्ट दी थी कि यूक्रेन ने संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव 1172 के पक्ष में मतदान किया था जिसमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत के परमाणु परीक्षण की निंदा की गई थी। हालाँकि, जब प्रस्ताव 1172 सर्वसम्मति से पारित किया गया था तब यूक्रेन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का सदस्य देश नहीं था , इसलिए वह मतदान प्रक्रिया में भाग नहीं ले सकता था और प्रस्ताव 1172 में भी कोई मंजूरी नहीं थी। हालाँकि, यूक्रेन निरस्त्रीकरण सम्मेलन का सदस्य था, जहाँ संयुक्त राष्ट्र में यूक्रेन के स्थायी प्रतिनिधि मायकोला मैमेस्कुल ने भारत द्वारा परमाणु परीक्षण की निंदा की थी। संयुक्त राष्ट्र में यूक्रेन के स्थायी प्रतिनिधि वलोडिमिर येलचेंको ने एक विशेष अतिरिक्त बयान में परमाणु हथियारों के परीक्षण के लिए भारत की निंदा की।

भारत और यूक्रेन के बीच 17 से अधिक द्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जिनमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग, विदेश कार्यालय परामर्श, अंतरिक्ष अनुसंधान में सहयोग, दोहरे कराधान से बचाव और निवेश के संवर्धन और संरक्षण पर समझौते शामिल हैं। एयरो इंडिया 2021 के दौरान, यूक्रेन ने भारत के साथ 530 करोड़ के चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए, जिसमें नए हथियारों की बिक्री के साथ–साथ भारतीय सशस्त्र बलों के साथ सेवा में मौजूदा हथियारों का रखरखाव और उन्नयन शामिल है। .भारत–यूक्रेन व्यापार संबंध और आर्थिक सहयोग दोनों देशों के बीच लंबे समय से चली आ रही दोस्ती के आधार पर विकसित हुआ है। मार्च, 1992 में भारत और यूक्रेन के बीच मित्रता और सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे भारत–यूक्रेन व्यापार संबंधों को बड़ा बढ़ावा मिला।

भारत–यूक्रेनी व्यापार संबंध बहुत तेजी से विकसित हो रहे हैं। 2003–2005 के दौरान भारत–यूक्रेन व्यापार में तीन गुना वृद्धि हुई और यह 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया। भारत से यूक्रेन का आयात दोगुना हो गया है और 2006 में 3,214 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है, जबकि भारत को यूक्रेन का निर्यात 3.6 गुना बढ़ गया है और 2006 में 7,369 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है। 2005–2006 के दौरान भारत–यूक्रेन व्यापार में कुल कारोबार 3.1 अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया है। यूक्रेन द्वारा भारत से आयात की जाने वाली मुख्य वस्तुएं दवाएं, फार्मास्युटिकल उत्पादन, अयस्क और खनिज, तंबाकू उत्पाद, चाय, कॉफी, मसाले, रेशम और जूट हैं । भारत द्वारा यूक्रेन से आयात की जाने वाली मुख्य वस्तुएं रसायन, उपकरण, मशीनें और इंजन हैं। पिछले 25 वर्षों में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और 2018–19 में यह लगभग 2.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। भारत एशिया–प्रशांत में यूक्रेन का सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य और कुल मिलाकर पांचवां सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है।

यूक्रेनी और भारतीय दोनों सरकारें यूक्रेन भारतीय अंतर–सरकारी आयोग के सत्रों में भाग लेती हैं जो यूक्रेन–भारत की संयुक्त व्यापार परिषद की बैठक आयोजित करती हैं। इससे भारत–यूक्रेन व्यापार संबंधों को बड़ा बढ़ावा मिला है। यूक्रेन भारतीय उद्योग में कोई नया सदस्य नहीं है क्योंकि इसके उद्यम सक्रिय रूप से शामिल हैं और भारतीय बिजली क्षेत्र और भारी उद्योगों सहित अन्य उद्योगों की रीढ़ हैं। 'यूक्रिनडस्ट्री' जैसी संयुक्त स्टॉक कंपनियां हैं जिन्होंने राउरकेला और बोकारो में धातुकर्म संयंत्रों में कोक बैटरी पुनर्निर्माण के संचालन के लिए अनुबंध जीता है। भारत–यूक्रेन व्यापार संबंध दोनों देशों के बीच प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने में भी सफल रहे हैं।

मई 1992 में भारत और यूक्रेन के बीच हस्ताक्षरित समझौते के तहत, संयुक्त एस एंड टी समिति परियोजनाओं के कार्यान्वयन, प्रदर्शनियों के आयोजन और वैज्ञानिक अनुसंधान में सहयोग पर चर्चा करने के लिए सालाना बैठक करती है। समिति की आखिरी बैठक अक्टूबर 2007 में कीव में हुई थी और कार्यान्वयन के लिए 11 एस एंड टी परियोजनाओं को मंजूरी दी गई थी। दिसंबर 2004 में नई दिल्ली में यूक्रेनी विज्ञान और प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन किया गया। यूक्रेन की राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी और इसरो के बीच अंतरिक्ष क्षेत्र में सहयोग जारी है। यूक्रेन के पास बहुत मजबूत आईटी सेक्टर है। कई ऑफशोर कॉल सेंटर सफल रहे हैं। मुंबई की एप्टेक लिमिटेड ने मई 2004 में यूक्रेन में स्कूलों और संस्थानों के लिए आईटी कार्यक्रम आयोजित करने के लिए इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पर्सनेल मैनेजमेंट (यूक्रेन में सबसे बड़ा आईटी प्रशिक्षण केंद्र) के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। जैव–प्रौद्योगिकी नवीनतम क्षेत्र है जहां बायोकॉन , जीनोम आदि कंपनियां एक–दूसरे के साथ सहयोग कर रही हैं। यह थर्मल , पनबिजली और परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के लिए टर्बाइनों की आपूर्ति भी करता है।

2005 में, तत्कालीन राष्ट्रपति ए. पी.जे. अब्दुल कलाम ने यूक्रेन में भारतीयों को दिए एक भाषण के दौरान अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में यूक्रेन के साथ सहयोग को मजबूत करने में रुचि व्यक्त की। उन्होंने और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के सदस्यों ने बाद में यूक्रेनी अंतरिक्ष एजेंसी युज्नोय का दौरा किया , जो दुनिया की सबसे बड़ी रॉकेट निर्माण इकाइयों में से एक है।

यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के दौरान, भारत ने तटस्थ रुख बनाए रखा था और संयुक्त राष्ट्र महासभा और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद दोनों में यूक्रेन में रूस के कार्यों की निंदा करने के उद्देश्य से कई प्रस्तावों के समर्थन में मतदान से परहेज किया था। भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में यूक्रेन पर 2022 के रूसी आक्रमण

की निंदा करने के प्रस्ताव पर मतदान से दूर रहने वाले तीन देशों में से एक था, जो अंततः स्थायी सदस्य रूस के वीटो के कारण विफल हो गया। भारत ने यूक्रेन में रूस के मानवाधिकार उल्लंघनों की जांच की मांग वाले प्रस्तावों और संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में रूस की सदस्यता समाप्त करने के उद्देश्य वाले प्रस्ताव के समर्थन में मतदान से भी परहेज किया है। बदले में, रूस ने भी रूस पर लक्षित प्रस्तावों से दूर रहने के लिए भारत की प्रशंसा की है और भारत की स्थिति को 'संतुलित और स्वतंत्र' बताया है ।

भारत सरकार ने भी यूक्रेन पर रूस के हमले की निंदा करने से इनकार कर दिया था और भारत–रूस की दोस्ती को ''अटूट'' बताया था । यूक्रेन पर आक्रमण के बाद, भारत ने रियायती मूल्य पर बड़ी मात्रा में रूसी तेल खरीदना दोगुना कर दिया और रूसी निर्मित हथियारों के लिए ऑर्डर देना जारी रखा। इसने 2022 में रूस को भारत का तीसरा सबसे बड़ा तेल आपूर्तिकर्ता बना दिया। 2021 में, रूस 17वें स्थान पर था, जो भारत के कुल तेल आयात का केवल एक प्रतिशत आपूर्ति करता था। अप्रैल 2022 से जनवरी 2023 तक, भारत का रूसी आयात 384: बढ़ गया, जो मुख्य रूप से रूसी तेल के आयात में वृद्धि के कारण हुआ। यूक्रेनी विदेश मंत्री दिमित्रो कुलेबा ने सस्ता रूसी तेल खरीदकर मुनाफा कमाने के लिए भारत की आलोचना की। 29 दिसंबर 2022 को, यूक्रेनी बुनियादी ढांचे के खिलाफ रूसी हमलों के बाद, कुलेबा ने ट्वीट किया, 'ऐसे सामूहिक युद्ध अपराधों के सामने कोई 'तटस्थता' नहीं हो सकती। 'तटस्थ' होने का नाटक करना रूस का पक्ष लेने के बराबर है। भारत सरकार ने यूक्रेन को आवश्यक दवाओं, आवश्यक चिकित्सा उपकरणों और स्कूल बसों सहित महत्वपूर्ण मात्रा में अहिंसक और मानवीय सहायता प्रदान की है।

ग्लोबल डायस्पोरा शिखर सम्मेलन 2022 में, अंतर्राष्ट्रीय अभिनेताओं ने प्रवासी भारतीयों के महत्वपूर्ण संसाधन का और अधिक लाभ उठाने के बारे में प्रारंभिक सिफारिशें प्रदान कीं। परिसंघ के कुछ सदस्यों ने प्रभावित कमजोर समूहों को संबोधित करने के लिए मानवीय सिद्धांतों और संचार कौशल पर अधिक मार्गदर्शन, अधिक समन्वय और अधिक क्षमता विकास की मांग की। इसके विपरीत, अन्य लोग स्वयं को प्रवासी संस्थाओं के रूप में नहीं पहचानते हैं, वे अनौपचारिक जमीनी स्तर के समूहों के रूप में बने रहना पसंद करते हैं जो अस्थायी क्षमता में कार्य करते हैं, गंभीर परिस्थितियों में एकजुट होते हैं।

कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, यूक्रेनी प्रवासी समूहों और व्यक्तियों ने सामुदायिक गतिशीलता के लिए अपार क्षमता दिखाई है, साथ ही सामुदायिक प्रतिक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने में सराहनीय प्रबंधकीय साहस और पारस्परिक कौशल भी दिखाया है। ऐसे समूह तेजी से विकसित हो रही स्थिति का जवाब देने के लिए नए और रचनात्मक समाधानों की ओर भी मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं – एक तरह से जो टिकाऊ हो।

## संदर्भ सुचि


1. https%//hi-wikipedia org/wiki/%E0%A4%AF%E0%A5%81%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%A8
2. https%//en-wikipedia-org/wiki/India%E2%80%93Ukraine_relations#cite_note&5
3. https%//www-icmpd-org/blog/2022/the&diaspora&response&to&war&in&Ukraine
4. भारत–यूक्रेन संबंधय 2014 विदेश मंत्रालय की रिपोर्ट